थनैला

रोकथाम एवं उपचार

डॉ मंयक रावत एवं अभिषेक

संयुक्त निदेशालय, प्रसार शिक्षा
भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान
इज्जतनगर – 243 122, उ.प्र.

थनैला रोग क्या है?

थनैला गाय के स्तनों के मुलायम ऊतकों की सूजन को कहते हैं। यह रोग अधिकतर जीवाणुओं द्वारा होता है। यह जीवाणु थन के छेद से प्रवेश पाकर स्तन ऊतकों में फैल जाता है।

थनैला मुख्य दो प्रकार का होता है:

- गाय से गाय में फैलने वाला (संसर्गीय)
- वातावरण से गाय में फैलने वाला (वातावरणीय)

गाय-से-गाय में फैलने वाला (जानने योग्य तथ्य)

- गाय से गाय में यह जीवाणु मुख्यताः निम्न कारणों से फैलता है जैसे दूषित दुग्ध के छीटों द्वारा, दोहन के समय दूध की धारा से दुहने वाले के हाथों से, दुहने की मशीन के कप द्वारा। यह मुख्यताः स्टैफाइलोकोकस ऑरियस से होता है। इस प्रकार का थनैला रोग पशुओं के आसपास के वातावरण में उपस्थित जीवाणु (जैसें कि मिट्टी में, बिछावन में) से फैलता है। यह मुख्यताः बियाने के समय दुग्धावस्था के प्रारम्भ में ही फैलते है। इस प्रकार के थनैला का मुख्य कारक स्ट्रेप्टोकोकस यूबेरिस होता है। यह जीवाणु अति तीव्र थनैला कर सकते है।

लक्षणों के आधार पर थनैला रोग दो प्रकार का होता है:

- पहला, जब थनैला के लक्षण जैसे दूध का थक्का व बंदरंग होना, स्तन की सूजन और कड़ापन अपनी आँखों द्वारा पहचाना जाये तब यह रोग लाक्षणिक थनैला कहलाता है।

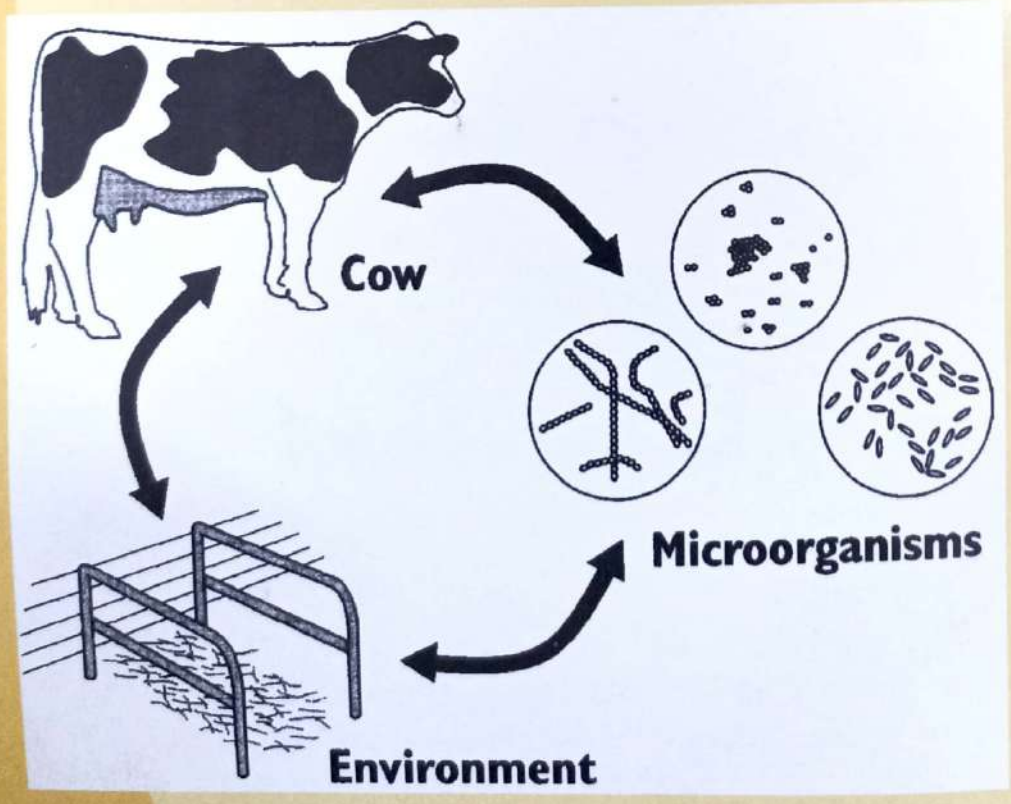

- यदि आँखों द्वारा स्तन व दूध में कोई खराबी नजर न आए तब इस रोग को अलाक्षणिक थनैला कहते हैं।

क्रं सं	रोग की अवस्था	गाय	स्तन	दूध
1	तीव्र लाक्षणिक थनैला	गंभीर रूप से बीमार, मृत्यु हो सकती है।	काला पड़ सकता है।	शुरूआत में सामान्य लेकिन शीघ्र ही असामान्य हो जाता है।
2	लाक्षणिक थनैला	बीमार हो भी सकती है अथवा नहीं	गर्म सूजा हुआ तथा दर्दीला	असामान्य, बदरंग, छिछड़े व खून के थक्के मिल सकते हैं।
3	साधारण थनैला	गाय सामान्य होती है।	हल्की सूजन व लालपन	असामान्य, छिछड़े व थक्के मिल सकते हैं।
4	दीर्घावधि थनैला	सामान्य	गाँठे मिल सकती है।	पनीला तथा अन्य साधारण परिवर्तन
5	अलाक्षणिक थनैला	सामान्य	सामान्य	दूध के संगठन में महत्वपूर्ण परिवर्तन, बदरंग

तीव्र गंभीर थनैला (काला स्तन दृष्टिगोचर है।)

उपचार तथा रोकथाम के उपाय :

थनैला एक जटिल रोग है इससे बचाव तथा रोकथाम के जो उपाय किसी एक गौशाला अथवा गाय के लिए सफल होते हैं आवश्यक नहीं है कि वह सभी अवस्थाओं एवं गौशाला में सफल हो।

- थनैला को खत्म नहीं किया जा सकता है। जीवाणु प्रतिरोधी औषधियों और बचाव के टीकों द्वारा इसकी पूर्ण रोकथाम भी संभव नहीं है।
- गायों की उत्तम देखभाल तथा जीवाणु प्रतिरोधी औषधियों द्वारा उपचार से इसकी तीव्रता व संख्या केवल कम की जा सकती है।
- थनैला रोग की रोकथाम तीन आधारभूत सिद्धान्तों द्वारा की जा सकती है।

- शीघ्र पहचान
- संक्रमित पशुओं का शीघ्र उपचार
- नये संक्रमणों से बचाव

पहचान

- रोगी गायों तथा संक्रमित स्तनों की शीघ्र पहचान समयानुकूल उपचार के लिए अत्यन्त आवश्यक है। इसके लिए सभी नयी गायों पर कैलीफोर्निया मैसटाइटिस (सीएमटी) परीक्षण किया जाना चाहिए।
- अलाक्षणिक थनैला ग्रसित गाय तथा उसका दूध सामान्य नजर आते है। परन्तु दूध में पाये जाने वाली कोशिकॉए सामान्य से अधिक हो जाती है। यदि इनकी संख्या दो लाख /एमएल से अधिक हो जाए तो यह असामान्य दूध होता है। सीएमटी गाय के पास किया जाने वाला एक आसान परीक्षण है जो गौ पालक अलाक्षणिक थनैला की तुरन्त जांच के लिए उपयोग कर सकते है।

सामग्री

1. चार छोटी प्लेट वाला परीक्षण पैडल
2. सीएमटी अभिक्रमक (इसको 10 ग्राम सर्फ को 100 एमएल पानी में घोलकर घर में भी बनाया जा सकता है।

तरीका

1. प्रत्येक थन की प्रथम कुछ दूध की धारा छोड़ने के बाद एक-एक पैडल में अलग-अलग थन की कुछ धारा ले लें तथा उसमें समान अनुपात में सीएमटी अभिक्रमक मिलाएं।
2. इन दोनों को खूब हिलाकर मिलाएं।

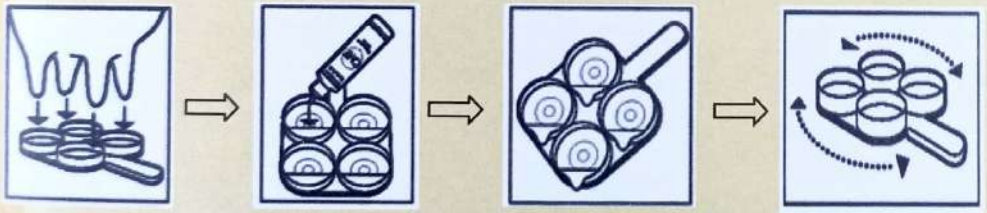

दूध की धारा | अधिक दूध फेंक दें | सीएमटी अभिक्रमक | पैडल को हिलाए मिलाए

संक्रमित थन के दूध का जैली जैसा थक्का

3. जो थन संक्रमिक होगा उसका दूध 30 सेकेण्ड में जैली जैसा थक्का हो जाएगा जिसका कड़ापन दूध की कोशिकाओं की संख्या पर निर्भर करेगा।

उपचार

गौ-पालक स्वयं थनैला रोग का उपचार नहीं कर सकते। उनका कोई भी उपचार आरंभ करने से पूर्व पशु-चिकित्सक की सलाह से निम्न दो प्रश्नों का समाधान किया जाना चाहिए।

1. संक्रमण की तीव्रता क्या है।
2. क्या उसका उपचार तुरन्त किया जाना चाहिए। अथवा वह गाय के सूखने तक टाला जा सकता है
3. क्या वास्तव में यह कोई नया संक्रमण है अथवा रोगी गाय को पहले भी उपचरित किया जा चुका है।

थनैला रोग ग्रसित स्तन का प्रतिजैविक औषधि द्वारा उपचार

रोकथाम

1. साधारणतयः यह माना जाता है कि रोकथाम सफल उपचार से बेहतर है।
2. थनैला रोग की रोकथाम के तीन आधारभूत सिद्धान्त है। थनाग्र के आसपास कारक जीवाणुओं की संख्या कम करना, थनों में जीवाणुओं के प्रसार को कम करना।

सूखी अवस्था में गाय के थनों का उपचार व संक्रमण की रोकथाम

इसके लिए निम्नलिखित उपाय काम में लिए जा सकते हैं :

1. दुहने से पहले व बाद में थनाग्रों का विसंक्रमण, ऐसा करने से थनैला रोग लगभग 50 से 60 प्रतिशत कम गायों में पाया जाता है। दुहने से पहले थनाग्र विसंक्रमण से लगभग 50 प्रतिशत वातावरणीय जीवाणु कम हो जाते है।
2. सूखी गाय में जीवाणुरोधी औषधि के उपयोग से थनैला की सफल रोकथाम की जा सकती है।

3. यदि दुहने की मशीन का उपयोग हो तो उसकी साफ सफाई व विसंक्रमण अत्यन्त आवश्यक है।
4. जिन गायों का उपचार सफल न हो उन्हें अलग रखना चाहिए।
5. गौशाला में पशुओं की संख्या चाहे जितनी भी हो, थनैला प्रत्येक गाय की पृथक समस्या है। अतः इसका समाधान पृथक तरीके से होता है।
6. इस व्याधि के रोकथाम व उपचार की समुचति योजना बनाने के लिए प्रत्येक गौ-पालक को इसकी जानकारी आवश्यक है।

याद रखें

- रोकथाम, उपचार से बेहतर है।
- दोहन के पश्चात थनो का विःसंक्रमण, तथा गायों का सूखी अवस्था में उचित उपचार थनैला रोकथाम के सर्वाधिक प्रभावी उपाय है।
- थनैला रोग की गायों की पहचान शीघ्र कर लेनी चाहिए।
- पशु चिकित्सक की सलाह से थनैला ग्रसित गायों का उपाय किया जाना चाहिए।
- संक्रमित एवं उपचरित गायों एवं स्तनों का संपूर्ण लेखा जोख़ा रखना आवश्यक है।

लेखकः डॉ मंयक रावत
प्रधान वैज्ञानिक, मानकीकरण विभाग
डॉ अभिषेक
वैज्ञानिक, जीवाणु एवं कवक विज्ञान

संरक्षण एवं निर्देशनः डा. त्रिवेणी दत्त
संयुक्त निदेशक, प्रसार शिक्षा,
भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान,
इज्जतनगर - 243 122, उ.प्र.

संपादनः डा. (श्रीमती) रूपसी तिवारी
वरिष्ठ वैज्ञानिक, संयुक्त निदेशालय, प्रसार शिक्षा
डा. बी.पी. सिंह
वरिष्ठ वैज्ञानिक, संयुक्त निदेशालय, प्रसार शिक्षा

प्रकाशन : डा. राजकुमार सिंह
निदेशक, भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान,
इज्जतनगर - 243 122, उ.प्र.

army printing press
www.armyprintingpress.com
Lucknow (0522) 6565333